

डॉ. अल फुहर, एक्लेसिएस्टेस, सत्र 9

© 2024 अल फुहर और टेड हिल्डेब्रांट

के माध्यम से भी कोई यिन्नो या अंतिम स्थायी लाभ नहीं पा सका है जो एक व्यक्ति इस दुनिया में कभी भी हासिल कर सकता है, फिर भी वह अभी भी वह खोजना चाहता है जो टोव है, क्या अच्छा है। और इसलिए, अध्याय 6 के अंत में, वह इस यात्रा या इस खोज को फिर से उन्मुख करता हुआ प्रतीत होता है कि टीओवी क्या है। अब निश्चित रूप से पहले अध्यायों में, हम बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट के विचारों और प्रतिबिंबों में लौकिक ज्ञान का समावेश पाते हैं।

लेकिन यह अध्याय 7, 10, और 11 में है कि हमें अधिक कहावतें एकत्रित मिलती हैं और हमें एक प्रकार की संभाव्य बुद्धि पर वास्तविक जोर मिलता है जहां कोहेलेट पाता है कि इस पतित, बोझिल, अनिश्चित दुनिया में एक आदमी के लिए क्या अच्छा है जिसमें हम रहते हैं। हम अध्याय 7 से 12 में मृत्यु की अनिवार्यता जैसे अन्य उद्देश्यों के जीवन का आनंद लेने से जुड़ी निरंतरता भी पाते हैं। हम पाते हैं कि अध्याय 12 में विशेष रूप से हमारा ध्यान परमेश्वर के भय पर केंद्रित है।

लेकिन हम पुस्तक के अध्याय 11 में ईश्वर के भय के भाव को भी देखते हैं। और इसलिए, हम अपना सर्वेक्षण जारी रखते हैं, अध्याय 7 और पद 1 के साथ सभोपदेशक की पुस्तक की हमारी संक्षिप्त व्याख्या। अब अध्याय 7 में, हमें कहावतों से बेहतर का एक संग्रह मिला है जहां एक चीज़ को दूसरे से बेहतर माना जाता है और यह यह वास्तव में आनंददायक जीवन के परहेजों के साथ अच्छी तरह मेल खाता है। मनुष्य के लिए जीवन का आनंद लेने से बेहतर कुछ भी नहीं है।

यह टीओवी क्या है यह जानने की खोज के साथ भी खुद को अच्छी तरह से संरेखित करता है। और इसलिए, कुछ अर्थों में अध्याय 7 का श्लोक 7 या श्लोक 1, अध्याय 6 और श्लोक 12 में पूछे गए प्रश्न का तुरंत उत्तर देता प्रतीत होता है। कौन जानता है कि क्या अच्छा है? अच्छा नाम उत्तम सुगंध से उत्तम है, और मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम है।

अब कुछ लोग इसे पढ़ेंगे और कहेंगे कि वाह, हमने कोहेलेट को इस बारे में थोड़ी सी बात करते देखा है कि कैसे एक मृत बच्चा बनना बेहतर है जिसने कभी सूरज नहीं देखा है, दुख और दुःख का जीवन जीने की तुलना में। और फिर भी आप इस तरह की कहावत को देखते हैं और सोचते हैं कि मृत्यु का दिन जन्म के दिन से बेहतर है। किसी के जन्म के दिन हम खुशी मनाते हैं, किसी की मृत्यु के दिन हम शोक मनाते हैं।

लेकिन फिर से, उस सन्दर्भ या तर्क की पंक्ति को ध्यान में रखें जिसमें यह कथन पाया गया है। वास्तव में जो छंद आगे आते हैं वे हमें कुछ संकेत देते प्रतीत होंगे कि श्लोक 1 में कोहेलेट का मुद्दा क्या है। इसे छोड़ देना बेहतर है शोक के घर में जाने की बजाय मृत्यु भोज के घर में जाना हर आदमी की नियति है। जीवितों को इसे हृदयंगम कर लेना चाहिए।

मृत्यु की अनिवार्यता के प्रकाश में याद रखें कि सभोपदेशक की पुस्तक में हमें जो ज्ञान उपदेश मिलते हैं उनमें से एक है ईश्वर से डरना, यह जानते हुए संयम से जीना कि आपने जो कर्म किए हैं उनके लिए आप जवाब देंगे। हमने एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कहीं और यह भी पाया है कि

एक मूर्ख अपनी डींगें हांकने, आज की अपनी उपलब्धियों और भविष्य में सामने आने वाली अपनी उपलब्धियों पर डींगें हांकने के लिए जाना जाता है। कोहेलेट इस तथ्य के प्रकाश में कहेंगे कि मनुष्य अपने भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, कल क्या होगा इसके बारे में घमंड करना मूर्खता है।

कल क्या हो सकता है इस पर आपका कोई नियंत्रण नहीं है। और इसलिए ऐसा लगता है कि अध्याय 7 में यह लौकिक ज्ञान इस विचार को तैयार कर रहा है कि किसी उपलब्धि के पूरा होने तक इंतजार करना बेहतर है जब तक कि वह अपने अंत तक न पहुंच जाए, बजाय इसके कि भविष्य में जो अभी सामने आना बाकी है उस पर घमंड करें। तो, उस अर्थ में जब सभी चीजें तय हो जाती हैं और आप एक अच्छे जीवन की ओर देखते हैं तो आप यह घोषणा कर सकते हैं कि यह चीजों का अंत है और अब हम जानते हैं कि फलां जीवन कैसे सामने आया है।

हँसी से दुःख बेहतर है क्योंकि उदास चेहरा दिल के लिए अच्छा है। फिर, यह जीवन में संयम पर जोर देता है। यह आवश्यक रूप से निराशावादी या उस तरह का कुछ भी नहीं है, बल्कि पतित दुनिया में जीवन की वास्तविकताओं के प्रकाश में, संयम में रहना कुछ अर्थों में ज्ञान का लक्षण है।

बुद्धिमान का मन शोक के घर में रहता है, परन्तु मूर्खों का मन सुख के घर में रहता है। मूर्खों का गाना सुनने से बुद्धिमान व्यक्ति की डांट सुनना बेहतर है। कोहेलेट का कहना है कि इस तरह से जीवन जीना कि आप ज्ञान की फटकार से बेखबर हों, मूर्खतापूर्ण जीवन है।

जैसे घड़े के नीचे काँटों की चटकना, वैसी ही मूर्खों की हँसी है। दूसरे शब्दों में, मूर्ख के लिए, गलती करने वाले के लिए डांट प्रशंसा से बेहतर है। हालाँकि, यह भी भारी है।

दूसरे शब्दों में, हम इस दुनिया में जीवन की इस चक्रीय भावना को देखते हैं और हम देखते हैं कि कल के मूर्ख फिर से भविष्य में आएंगे और आप मूर्खता और पागलपन के इस चक्र को देखने जा रहे हैं जो लगातार जारी रहेगा। उपदेश एक बुद्धिमान व्यक्ति को मूर्ख बना देता है, और इस प्रकार की डांट एक बुद्धिमान व्यक्ति के बुद्धिमान होने के लिए आवश्यक है, उपदेश एक बुद्धिमान व्यक्ति को मूर्ख बना देता है और रिश्तत हृदय को भ्रष्ट कर देती है। मुझे खेद है, मैं गलत बोल गया।

रंगदारी बुद्धिमान मनुष्य को मूर्ख बना देती है, और रिश्तत हृदय को भ्रष्ट कर देती है। वहाँ आप भ्रष्टाचार का स्वाभाविक परिणाम देखते हैं। किसी मामले का अंत उसकी शुरुआत से बेहतर है, और धैर्य घमंड से बेहतर है।

मुझे श्लोक 8 बहुत पसंद है क्योंकि वास्तव में आप यहां जो देख रहे हैं वह इस विचार पर जोर देता है कि आइए जश्न मनाने के लिए किसी चीज के अंत तक इंतजार करें, आइए पहले से जश्न मनाएं, ऐसा करना केवल मूर्खता है। अपनी आत्मा में शीघ्र क्रोध न करना, क्योंकि क्रोध मूर्खों की गोद में रहता है। नीतिवचन के ज्ञान के अनुरूप, हम पाते हैं कि जो धैर्यवान है और जो अपने शब्दों को रोकने के लिए तैयार है, वह बुद्धिमान व्यक्ति होगा।

मत कहो, ये पुराने दिन इनसे अच्छे क्यों थे? दूसरे शब्दों में, अतीत में मत जियो, अतीत पर ध्यान मत दो, वर्तमान में जियो, और भविष्य के बारे में ऐसे मत बोलो जैसे कि तुम जानते हो कि क्या होने वाला है, क्योंकि ऐसा करना बुद्धिमान नहीं है ऐसे प्रश्न पूछें. मानवजाति के पास जो सीमित दायरा है, उसमें एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए भी अपना ध्यान वर्तमान पर केंद्रित रखना बुद्धिमान है। विरासत की तरह बुद्धि एक अच्छी चीज़ है और इससे उन लोगों को लाभ होता है जो सूर्य को देखते हैं।

तो, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में ज्ञान का सम्मान किया जाना चाहिए, यह कुछ ऐसा है जो लाभ प्रदान करता है, लेकिन इसके लाभ भी सीमित हैं, खासकर यिट्रोन को खोजने के प्रकाश में। बुद्धि एक आश्रय है, जैसे धन एक आश्रय है, दूसरी बुद्धि कुछ लाभ और सुरक्षा की भावना प्रदान करती है, लेकिन ज्ञान का लाभ यह है, कि बुद्धि अपने मालिक के जीवन की रक्षा करती है, कुछ ऐसा जो पैसा अंततः करने में सक्षम नहीं हो सकता है। विचार करो कि परमेश्वर ने क्या किया है, जो कुछ उस ने टेढ़ा कर दिया है उसे कौन सीधा कर सकता है? जब समय अच्छा हो तो खुश रहो, लेकिन जब समय बुरा हो तो विचार करो।

ईश्वर ने एक को भी बनाया है और दूसरे को भी, इसलिए मनुष्य अपने भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं खोज सकता। फिर, एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में जो कुछ हम दोहराते हुए देखते हैं, वह यह तथ्य है कि मनुष्य अंततः भविष्य जानने में असमर्थ है, यहाँ तक कि एक बुद्धिमान व्यक्ति भी नहीं। अपने इस कठिन जीवन में, मैंने इन दोनों को देखा है, एक धर्मी व्यक्ति अपनी धार्मिकता में नष्ट हो जाता है और एक दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता में लंबे समय तक जीवित रहता है।

हमने इस तरह की भाषा पहले भी देखी है जहां कोहेलेट दुनिया में अन्याय को देखता है और वह ईश्वर की ओर से न्याय की कमी को देखता है, लेकिन उसे यह भी एहसास होता है कि मनुष्य के लिए ईश्वर को प्रलोभित करना मूर्खतापूर्ण होगा या जैसा कि हम कभी-कभी कहते हैं, भाग्य को लुभाने के लिए. अति धर्मी न बनो, न अति बुद्धिमान बनो। अपने आप को क्यों नष्ट करें? पहले के एक व्याख्यान में, हमने इस शब्द शेमम को देखा था, जो एक हिब्रू शब्द है, जिसका अक्सर पुराने नियम में अनुवाद किया जाता है, जिसका अनुवाद विनाश या उसी की तर्ज पर कुछ और के रूप में किया जाता है, लेकिन इस संदर्भ में, यह वास्तव में संदर्भित हो सकता है। विनाश के परिणाम जो पुराने नियम के कई संदर्भों में आश्चर्यचकित करने वाले होंगे।

शेमाम के संबंध में इस प्रकार की भाषा अन्यत्र भी प्रयोग की जाती है। यहां विचार शायद यह है कि कोहेलेट कह रहे हैं, यह मत सोचो कि धर्मी होने से, अपने आप को किसी प्रकार की अपेक्षा के साथ प्रयास करने से कि आपकी धार्मिकता के कारण चीजें आपके लिए अच्छी होंगी, आश्चर्यचकित न हों। अपने आप को आश्चर्यचकित क्यों करें? क्योंकि हमने देखा है कि कभी-कभी धर्मी अपनी धार्मिकता में नष्ट हो जाते हैं।

कभी-कभी धर्मियों को वही मिलता है जिसके मूलतः दुष्ट पात्र होते हैं। और इसलिए, ऐसा कहने के लिए, अपने सभी अंडे उस टोकरी में न रखें, क्योंकि इस तरह की भारी दुनिया में, कुछ भी गारंटी नहीं है। भले ही मानक अपेक्षा यह होगी कि धर्मी लोग समृद्ध होंगे, लेकिन ऐसी दुनिया में जहां हम आने वाली चीजों के प्रति इतने अनिश्चित हैं, हमारे पास इसकी कोई गारंटी नहीं है।

अति दुष्ट मत बनो और मूर्ख मत बनो। समय से पहले क्यों मरें? अपने सभी अंडे धार्मिकता की टोकरी में यह उम्मीद करके न रखें कि आगे अच्छी चीजें होंगी और साथ ही, यह भी न सोचें कि भगवान नहीं देख रहे हैं। मूर्ख का अभिनय मत करो।

दुष्टता का कार्य मत करो। दुष्टों को बचकर भागते हुए देखकर दुष्टतापूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित न हों क्योंकि हो सकता है कि आप स्वयं को पृथ्वी से अलग कर लें। हो सकता है कि ईश्वर आपके विरुद्ध अपना न्याय और यहीं और अभी आपके विरुद्ध अपना न्याय पूरा करे।

एक को पकड़ना और दूसरे को छोड़ना नहीं अच्छा है। दूसरे शब्दों में, यह मत सोचो कि कोई गारंटी है और साथ ही, यह सोचकर मूर्खतापूर्ण कदम मत उठाओ कि भगवान कभी कार्य नहीं करता है। जो मनुष्य ईश्वर से डरता है वह सभी चरम सीमाओं से बच जाएगा।

दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति ईश्वर से डरता है, उसमें यह अपेक्षा होगी कि ईश्वर न्याय करेगा और यह भी पहचानेगा कि ईश्वर किसी व्यक्ति को केवल उसके धार्मिक कार्यों के लिए पुरस्कृत करने के लिए बाध्य नहीं है। बुद्धि एक बुद्धिमान व्यक्ति को एक शहर के दस शासकों से अधिक शक्तिशाली बनाती है। दूसरे शब्दों में, यह विचार कि बुद्धि कुछ अर्थों में तलवार से भी अधिक शक्तिशाली है।

पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो धर्म के काम करता हो, और कभी पाप न करता हो। एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में, हमने इस बारे में बात की है कि उत्पत्ति अध्याय तीन की भाषा कैसे व्याप्त है, और निश्चित रूप से पतित दुनिया में जीवन पर विचार करते हुए, कोहेलेट का मानना है कि सभी मनुष्य पापी हैं। यह आवश्यक रूप से उसी प्रकार का धार्मिक कथन नहीं है जैसा कि हम रोमनों की पुस्तक में पाते हैं, लेकिन यह दिलचस्प है कि कोहेलेट हमारी गिरी हुई स्थिति की वास्तविकता को दर्शाता है।

लोगों के कहे हर शब्द पर ध्यान न दें, नहीं तो आप अपने नौकर को आपको कोसते हुए सुन सकते हैं। क्योंकि तुम अपने मन में जानते हो, कि तुम ने आप ही कई बार दूसरों को शाप दिया है। कोहेलेट बुद्धिमान व्यक्ति यहां कुछ लौकिक ज्ञान प्रदान करता है।

जैसा काम करोगे वैसा ही फल मिलेगा। और इसलिए कोहेलेट कहते हैं, अपने आप को निर्दोष मत समझो। जब आप अपने विरुद्ध किए गए कार्यों को देखें तो आश्चर्यचकित न हों क्योंकि आप स्वयं जानते हैं कि आपने कई बार दूसरों के विरुद्ध कार्य किए हैं।

यह सब मैंने बुद्धि से परखा और मैंने कहा कि मैं बुद्धिमान बनने के लिए दृढ़ हूं, लेकिन यह मेरे से परे था। अध्याय एक और दो में पहले के चिंतन को याद रखें, कोहेलेट ने ज्ञान की तलाश की, लेकिन अंततः उन्होंने पाया कि ज्ञान कुछ ऐसा था जो कम से कम अपने पूर्ण अर्थ में समझ से बाहर था। दूसरे शब्दों में, वह लगातार अधिक से अधिक बुद्धिमान बनने की उपलब्धि हासिल कर सकता है, और फिर भी वह कभी भी हर चीज पर महारत हासिल नहीं कर पाएगा।

ज्ञान चाहे जो भी हो, वह बहुत दूर और सबसे गहन है। इसे कौन खोज सकता है? बिल्कुल सही बयान उस आदमी की ओर से आ रहा है जो सभी में सबसे बुद्धिमान होने का दावा कर रहा है। इसलिए, मैंने अपना दिमाग समझने, जांच करने और चीजों की योजना में ज्ञान की खोज करने, जीवन की भारीता जो मैं शायद सुझाऊंगा, और दुष्टता की मूर्खता और मूर्खता के पागलपन को समझने के लिए लगाया।

अध्याय एक को याद करें, उसने ज्ञान के माध्यम से ज्ञान, पागलपन और मूर्खता का पता लगाने की कोशिश की थी। अब वह वापस इसी विषय पर आते हैं। मुझे वह स्त्री मृत्यु से भी अधिक दुखद लगती है जो जाल है, जिसका हृदय जाल है, और जिसके हाथ जंजीर हैं।

जो मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न करता है वह उस से बच निकलेगा, परन्तु पापी को वह फँसा लेगी। शायद कोहेलेट यहां उस तरह की सोच पर विचार कर रहे हैं जिसे हम नीतिवचन अध्याय छह और सात में देखते हैं, जहां आप एक बुद्धिमान व्यक्ति को उस जाल को समझते हुए पाते हैं जो इस तरह की महिला ला सकती है। निश्चित रूप से, प्राचीन दुनिया में ज्ञान पुरुष दर्शकों की ओर उन्मुख रहा होगा, और इसलिए हमें नीतिवचन छह और सात की तुलना में अब इतना झटका नहीं लगना चाहिए।

हालाँकि, हमें एहसास है कि इस तरह की भाषा महिलाओं के लिए कुछ हद तक अपमानजनक लग सकती है, खासकर जो हम यहाँ श्लोक 28 में खोजने जा रहे हैं। यह ध्यान में रखने में मदद मिल सकती है कि शायद कोहेलेट केवल शब्दों के बारे में नहीं सोच रहे हैं एक प्रकार का यौन जाल। हो सकता है कि वह इस भाषा में उत्पत्ति अध्याय तीन, चीजों की योजना, पतित दुनिया में जीवन जीने के परिणाम पर विचार कर रहा हो।

और हम उत्पत्ति अध्याय तीन में श्रापों में पाते हैं, महिलाओं को दर्द और बच्चे पैदा करने के श्राप के संबंध में एक अस्पष्ट बयान मिलता है, और इसमें एक प्रकार के अभिशाप की भावना भी होती है जहां उसकी इच्छा उसके पति के लिए होगी, लेकिन उसे उस पर शासन करना चाहिए। और हम देखते हैं कि पतन के परिणामस्वरूप, लिंगों के बीच तनाव होता है। हम पाते हैं कि लिंगों के बीच यह तनाव कुछ ऐसा है जिसे विवाह में अनुभव किया जाता है, यह रिश्तों में अनुभव किया जाता है।

जिसे भगवान ने अच्छा बनने के लिए बनाया था, जिसे भगवान ने साहचर्य की परिपूर्ण भावना के लिए बनाया था, वह पतन के कारण भ्रष्ट हो गया है, और इसलिए यह तनाव, यह संघर्ष है। वास्तव में, उत्पत्ति 3.16 भाषा में उत्पत्ति अध्याय चार और श्लोक सात के बहुत करीब है, जहां भगवान कैन से कहते हैं कि मनुष्य, मनुष्य के हृदय और पाप के बीच एक प्रकार का संघर्ष होगा, और पाप प्रयास करेगा मनुष्य पर शासन करो, लेकिन तुम्हें उस पर प्रभुत्व प्राप्त करना होगा। कुछ ऐसे अर्थ हो सकते हैं जो पुरुष और महिला के बीच एक ही तरह के रिश्ते को प्रतिबिंबित करते हों।

भूमिका संबंध के अर्थ में पुरुष स्त्री पर शासन करेगा, और फिर भी दोनों के बीच इस प्रकार का संघर्ष और तनाव रहेगा। हो सकता है कि कोहेलेट के मन में यह ज्ञान कुछ हो। श्लोक 27 में वह कहता है, या यह कहता है, देखो, शिक्षक कहते हैं, मैंने यही खोजा है।

चीजों की योजना की खोज करने के लिए एक चीज को दूसरे में जोड़ना, दूसरे शब्दों में, इस पतित, स्वर्ग की दुनिया में चीजों का पता लगाना, जबकि मैं अभी भी खोज रहा था और नहीं पा रहा था, फिर से वह यित्रीन की इस खोज में कभी नहीं करता है, इसे ढूँढ़ें, मैं हजार में से एक भी खरा पुरुष पाया, परन्तु सब में से एक भी सीधी स्त्री न पाई। अब यह निश्चित रूप से एक बहुत ही कठिन कथन है, और मुझे नहीं लगता कि कोहेलेट यहां यह कह रहे हैं कि कुछ लोग धर्मी हैं। वास्तव में, पहले श्लोक 20 में, वह कहता है कि पृथ्वी पर कोई भी धर्मी व्यक्ति नहीं है जो सही काम करता हो और कभी पाप न करता हो, लेकिन शायद वह उस संभावित जाल पर विचार कर रहा है जो महिला एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए भी ला सकती है, तथ्य यह है कि यह तनाव होगा, कि अधिकार के लिए यह संघर्ष होगा, और एक चीज जिसे कोहेलेट की सोच में एक बुद्धिमान व्यक्ति समझ और नियंत्रित नहीं कर सकता है वह महिला है, और इसलिए शायद महिला को एक संभावित जाल के रूप में भी देखा जाता है ज्ञान की खोज।

बस यही मुझे मिला है। ईश्वर ने मानवजाति को पुरुष और महिला दोनों को ईमानदार बनाया, लेकिन पुरुष कई योजनाओं की तलाश में चले गए हैं। दूसरे शब्दों में, फिर से, पतन को प्रतिबिंबित करते हुए, भगवान ने सभी चीजों को अच्छी और बहुत अच्छी बनाया, और भगवान ने मानव जाति को इस तरह की गंदगी में नहीं रहने के लिए बनाया, जैसा कि हम बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट द्वारा वर्णित और महसूस करते हैं।

कोहेलेट एक बुद्धिमान व्यक्ति है जो गिरी हुई दुनिया में जीवन का अवलोकन करता है, और वह इस तथ्य से बहुत परेशान है कि चीजें इस तरह से डिज़ाइन नहीं की गई थीं, और इसलिए वास्तव में एक्लेसिएस्टेस कुछ अर्थों में किसी प्रकार की खोज के लिए ज्ञान का प्रयास करता प्रतीत होता है पतन का समाधान जिसे हम उत्पत्ति के अध्याय 3 में परिलक्षित देखते हैं। अब कोहेलेट ने ज्ञान को पूरी तरह से नहीं छोड़ा है। तथ्य की बात के रूप में, हम नीतिवचन और सभोपदेशक में बार-बार ज्ञान के फायदों की एक तरह की पुष्टि देखते हैं, और इसलिए ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम नहीं होने की इस अस्वीकृति और उन जालों और योजनाओं के बारे में उनकी निराशा के बाद जो शायद ज्ञान में बाधा डाल सकते हैं, आप अध्याय 8 में ज्ञान की पुष्टि करने वाले एक कथन की शुरुआत पाते हैं।

बुद्धिमान व्यक्ति के समान कौन है? चीजों की व्याख्या कौन जानता है? बुद्धि मनुष्य के चेहरे को चमका देती है और उसका कठोर रूप बदल देती है। ज्ञान प्राप्त करना और समझना जितना कठिन है, फिर भी ज्ञान, एक बार किसी भी स्तर पर समझ लिया जाए, लाभ प्रदान करेगा। इससे मनुष्य के चेहरे पर निखार आता है।

अब अध्याय 8 और श्लोक 2 से 4 में, हमारे पास एक बुद्धिमान व्यक्ति के राजा के साथ संबंध के बारे में कथनों का एक सेट है, और यह जानना थोड़ा दिलचस्प है कि अध्याय 8 के श्लोक 2 से 4 के शब्द कुछ अर्थों में शब्दों को प्रतिबिंबित करते हैं। अध्याय 5 छंद 1 से 7 तक, जहां कोहेलेट

एक बुद्धिमान व्यक्ति की परमात्मा के समक्ष उचित मुद्रा, और एक बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा परमात्मा के प्रति उचित श्रद्धा को दर्शाता है। यहां आपके पास उचित सम्मान और उस तरह की मुद्रा है जो एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए राजा के सामने लाने के लिए उपयुक्त है। पाठ कहता है, राजा की आज्ञा का पालन करो, मैं कहता हूं, क्योंकि तूने परमेश्वर के सामने शपथ खाई है।

राजा की उपस्थिति छोड़ने में जल्दबाजी मत करो। किसी बुरे उद्देश्य के लिए खड़े न हो, क्योंकि वह जो चाहेगा वही करेगा। दूसरे शब्दों में, कुछ अर्थों में, राजा वह है जो नियंत्रण में है।

राजा वह होता है जो जो चाहे वही करेगा, भले ही आप राजा के सामने मुकदमा लड़ें। ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट एक बुद्धिमान व्यक्ति कह रहा है, जब वह राजा के सामने आएगा, तो वह सावधान रहेगा कि वह कौन सी लड़ाई लड़ रहा है। दूसरे शब्दों में, वह राजा के सामने कोई भी मुद्दा हल्के में नहीं लाएगा, और वह राजा के सामने बहुत सारे कारण नहीं लाएगा।

उसकी गणना की जाएगी, और वह सावधान रहेगा। उसके पास एक तरह का विवेकाधिकार बरकरार रहेगा कि वह राजा के पास कैसे जाए और किन कारणों को वह राजा के सामने लाना उचित समझे। चूंकि राजा का वचन ही सर्वोपरि है, उससे कौन कह सकता है कि तुम क्या कर रहे हो? जिस तरह कोई ईश्वर की गतिविधि पर सवाल नहीं उठा सकता, उसी तरह एक बुद्धिमान व्यक्ति यह पहचानता है कि उसके ऊपर जो मानवीय अधिकार स्थापित हैं, हम उनके अधिकार पर भी सवाल नहीं उठा सकते।

जो कोई उसकी आज्ञा का पालन करेगा, उस पर कोई हानि न होगी, और बुद्धिमान हृदय उचित समय और रीति जान लेगा। यह उन विचारों को वापस लाने जैसा है जिन्हें हमने अध्याय तीन में समय पर कविता में प्रतिबिंबित होते देखा था। उचित एवं उचित समय।

उन बातों को जानकर, एक बुद्धिमान व्यक्ति समय और विवेक के महत्व को पहचानेगा, और फिर, समय महत्वपूर्ण है। क्योंकि हर मामले के लिए एक उचित समय और प्रक्रिया है, यह एक्लेसिएस्टेस अध्याय तीन की तरह लगता है, हालांकि एक आदमी का दुख उस पर भारी पड़ता है। इन्वोन की यही भाषा हमने अध्याय तीन के श्लोक दस में देखी।

पुनः, अध्याय तीन की भाषा पर विचार करते हुए। चूंकि कोई भी मनुष्य भविष्य नहीं जानता, तो उसे कौन बता सकता है कि क्या होने वाला है? मनुष्य पर सीमा थोपने और उस पर ईश्वर की संप्रभुता पर फिर से विचार करते हुए, शायद चौदहवें श्लोक में अध्याय तीन के बारे में फिर से सोच रहा हूँ। किसी भी मनुष्य के पास हवा पर काबू पाने की शक्ति नहीं है, इसलिए किसी के पास अपनी मृत्यु के दिन पर भी शक्ति नहीं है।

मनुष्य समय की उपयुक्तता को जान सकता है, लेकिन मनुष्य वह नहीं है जो अपनी मृत्यु का दिन निर्धारित करता है। शायद इस दृष्टिकोण को मान्य करते हुए कि भगवान का निर्धारित समय वह है जो कविता की शुरुआत में समय पर प्रतिबिंबित होता है, जन्म लेने का समय और मरने का समय। जैसे युद्ध के समय किसी को नहीं छोड़ा जाता, वैसे ही दुष्टता उन लोगों को नहीं छोड़ती जो इसका अभ्यास करते हैं।

दुष्टों के लिये हिसाब का दिन होगा। दूसरे शब्दों में, उनके पाप का अनुसरण निश्चित है। शायद सत्रहवें श्लोक में अध्याय तीन की भाषा को प्रतिबिंबित करते हुए, जहां कोहेलेट कहते हैं कि हिसाब-किताब का समय है।

हिसाब-किताब का एक दिन है जहाँ मनुष्य अपने किये कर्मों का उत्तर देगा और ईश्वर उससे हिसाब लेगा। और इसलिए, यहां अध्याय आठ की भाषा को अध्याय तीन में प्रतिबिंबित होते देखना बहुत दिलचस्प है। यह सब मैंने तब देखा जब मैंने सूर्य के नीचे होने वाली हर चीज़ पर अपना दिमाग लगाया।

एक समय ऐसा भी आता है जब इंसान खुद को नुकसान पहुंचाने के लिए दूसरों पर हावी हो जाता है। हमने उस प्रकार की भाषा पहले भी देखी है जहां एक व्यक्ति धन और खजाना केवल नुकसान पहुंचाने के लिए या केवल खुद को नुकसान पहुंचाने के लिए इकट्ठा करता है। अब हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरों पर अपना आधिपत्य जमाता है या अपने अधिकार और शक्ति को अपने कब्जे में ले लेता है, दूसरों पर अपना आधिपत्य जमाता है, जिससे पासा पलट जाता है और उसे इससे नुकसान होता है।

तब भी मैंने दुष्टों को दफ़न होते देखा। जो पवित्र स्थान से आते-जाते थे, और जिस नगर में उन्होंने ऐसा किया, वहां प्रशंसा पाते थे। दूसरे शब्दों में, लालच और भ्रष्टाचार भी अंततः कब्र की ओर ही जाते हैं।

ये भी हेवेल है . जब किसी अपराध की सज़ा शीघ्रता से नहीं दी जाती, तो लोगों के हृदय ग़लत करने की योजनाओं से भर जाते हैं। कोहेलेट अध्याय सात में चीजों की जिस योजना की खोज करता है, शायद उसके मन में वही बात है जब वह दुष्टों की योजनाओं को संदर्भित करता है।

हालाँकि दुष्ट व्यक्ति सैकड़ों अपराध करता है और फिर भी लंबे समय तक जीवित रहता है, दूसरे शब्दों में कभी-कभी न्याय की एक प्रकार की कमी होती है जिसे कोहेलेट देखता है, मुझे पता है कि यह ईश्वर से डरने वाले व्यक्ति के साथ बेहतर होगा जो ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखता है। यह उस प्रकार का ज्ञान है जो सुझाव देता है कि भले ही हम न्याय की मानक अपेक्षा में अपवाद देखते हैं, मैं भगवान को लुभाने नहीं जा रहा हूँ, मैं भाग्य को लुभाने नहीं जा रहा हूँ। क्यों अपने आप को न्यायसंगत पाया जाए और पृथ्वी से अलग कर दिया जाए? मैं जानता हूँ कि यह बेहतर होगा, यहां सामान्य ज्ञान की अपेक्षाओं की एक तरह की पुष्टि है।

तौभी दुष्ट लोग परमेश्वर का भय नहीं मानते, इस कारण उनका भला नहीं होगा, और उनके दिन छाया के समान लम्बे न होंगे। दूसरे शब्दों में, मैं बाहर निकलकर इस तरह से परमेश्वर को प्रलोभित नहीं करने जा रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि दुष्टों की अपेक्षा धर्मियों का भला होगा।

कुछ और भी घटित होता है, जो बेतुका है क्योंकि मुझे लगता है कि हम अर्थ के उस परिवार को इस हेवेल दुनिया में अन्याय और समानता की कमी के इन अवलोकनों के साथ सबसे आगे आते हुए देखते हैं। धर्मी मनुष्यों को वह मिलता है जिसके दुष्ट लोग हकदार हैं और दुष्ट मनुष्य जिन्हें वह मिलता है जो धर्मी लोग चाहते हैं। मैं भी कहता हूँ कि यह ठीक है और मैं इसके लिए आमीन कहूँगा।

मैं बहुत निराश हूँ. मैं एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परेशान हूँ जो इस दुनिया में भ्रष्टाचार और तत्काल न्याय और निर्णय की कमी को देखता है। जब मैं इस दुनिया में होने वाली चीजों को देखता हूँ तो मेरा दिल दुखता है और मैं कहता हूँ, भगवान, आप इसमें कहां हैं? मैं उसे भी हेवेल कहता हूँ .

यह बेतुका है. यह मानवीय विवेक का अपमान है। मैं इसे इससे अधिक नहीं समझा सकता, जितना बुद्धिमानों में से सबसे बुद्धिमान कोहेलेट इसे समझाने में सक्षम थे।

शायद ईश्वर हमें अनिश्चित स्थिति में रखने के लिए ही ऐसा करता है। शायद परमेश्वर ऐसा इसलिए करता है ताकि हम जान सकें कि हम पृथ्वी पर कौन हैं और वह स्वर्ग में कौन है। इसलिए, मैं जीवन के आनंद की सराहना करता हूँ।

आनंदमय जीवन के बढ़ते परहेजों को याद रखें। कोहेलेट पहले जीवन के आनंद को जीवन के भारीपन के प्रकाश में देखते थे और जरूरी नहीं कि इसके बावजूद भी, बल्कि इसके प्रकाश में। दूसरे शब्दों में, इस कठिन जीवन के कारण जिसमें हम रहते हैं, बुद्धिमान व्यक्तियों के रूप में हमें ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए उपहारों को प्राप्त करना चाहिए।

लेकिन अब वह शिक्षक या उपदेशक के रूप में, केवल इसकी संवेदनशीलता का निरीक्षण करने के बजाय जीवन के आनंद की सराहना करने जा रहे हैं। इसलिए, मैं जीवन के आनंद की सराहना करता हूँ क्योंकि कुछ भी बेहतर नहीं है, मुझे बताया गया है कि सूर्य के नीचे एक आदमी के लिए खाने-पीने और खुश रहने से बेहतर क्या है, इस सवाल का जवाब देते हुए, कुछ भी बेहतर नहीं है। तब उसके जीवन के सारे दिन जो परमेश्वर ने उसे सूर्य के नीचे दिए हैं, आनन्द उसके काम में साथ देगा, चाहे वे कितने ही दिन क्यों न हों।

जब मैंने ज्ञान को जानने के लिए अपना दिमाग लगाया, और अध्याय 7 को याद किया तो वह यह देखने के लिए ज्ञान की खोज कर रहा था कि ज्ञान पाया जा सकता है या नहीं और वह इस तथ्य से कुछ हद तक परेशान है कि ज्ञान अंततः अप्राप्य है, दूसरे शब्दों में, हमेशा और भी बहुत कुछ पाया जाना बाकी है . जब मैंने ज्ञान को जानने और पृथ्वी पर मनुष्य के परिश्रम को देखने के लिए, उसकी आँखों में दिन या रात में नींद न आने की, उस चिंता और प्रयास के बारे में सोचा जो वह अध्याय 4 और 5 में प्रतिबिंबित करता है, तब मैंने देखा कि भगवान के पास सब कुछ है यह ईश्वर ने किया है, जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे व्यवस्थित करने में ईश्वर की गतिविधि। कोई भी यह नहीं समझ सकता कि सूर्य के नीचे क्या चल रहा है, दूसरे शब्दों में, हम यह पता नहीं लगा सकते कि ईश्वर अक्सर क्या कर रहा है।

इसे खोजने के अपने सभी प्रयासों के बावजूद, मनुष्य इसका अर्थ नहीं खोज पाता है। मनुष्य ईश्वर का पता लगाने, ईश्वर का पता लगाने, ईश्वर पर प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम नहीं है। भले ही कोई बुद्धिमान व्यक्ति यह दावा करे कि वह जानता है, वह वास्तव में इसे समझ नहीं सकता है।

जैसा कि कोहेलेट ने बार-बार दोहराया है, मनुष्य अपने भविष्य के बारे में कुछ नहीं जान सकता। जैसा कि कोहेलेट ने ईश्वर पर विचार किया है, मनुष्य का ईश्वर के ऊपर कुछ भी निर्भर नहीं हो

सकता। चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, वह ईश्वर का पता नहीं लगा सकता और उस पर कब्जा नहीं कर सकता।

और इसलिए कोहेलेट अध्याय 9 के श्लोक 1 में इस पर विचार करता है। वह इस पर विचार करता है और निष्कर्ष निकालता है कि धर्मी और बुद्धिमान और वे जो करते हैं वह ईश्वर के हाथों में है, ईश्वर संप्रभु है, लेकिन कोई नहीं जानता कि प्यार या नफरत उसका इंतजार कर रही है। मनुष्य निश्चित रूप से संप्रभु नहीं है, मनुष्य अपने भविष्य के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, सिवाय इस तथ्य के कि वह एक साझा नियति साझा करता है। धर्मी और दुष्ट, अच्छे और बुरे, शुद्ध और अशुद्ध, वे जो बलिदान चढ़ाते हैं और जो नहीं करते, और वह सामान्य नियति क्या है? कब्र।

जैसा अच्छे आदमी के साथ होता है, वैसा ही पापी के साथ भी। जैसा शपथ लेने वालों के साथ होता है, वैसे ही उनके साथ भी होता है जो शपथ लेने से डरते हैं। सूर्य के नीचे जो कुछ भी घटित होता है उसमें यही बुराई है।

और यह कोई नैतिक बुराई नहीं है जिसका जिक्र कोहेलेट यहां कर रहे हैं। वह यहां केवल भारी गुस्से, झुंझलाहट, भारीपन की हताशा का जिक्र कर रहा है। सूर्य के नीचे जो कुछ भी घटित होता है उसमें यही बुराई है।

एक ही नियति सभी पर हावी हो जाती है, अध्याय 3 के श्लोक 21 और 22 के बारे में सोचें। इसके अलावा, मनुष्यों के दिल बुराई से भरे हुए हैं। कभी-कभी वे न्याय की स्पष्ट कमी से प्रेरित होते हैं।

और जब तक वे जीवित रहते हैं, तब तक उनके मन में पागलपन रहता है, और उसके बाद वे मरे हुएों में से हो जाते हैं। जो कोई जीवितों में से है उसे आशा है। यहां तक कि एक जीवित कुत्ता भी मरे हुए शेर से बेहतर है, शायद यह उस तरह के ज्ञान को दर्शाता है जिसे हम एक्लेसिएस्टेस में देखते हैं, वर्तमान में ज्ञान के कार्यान्वयन के संबंध में वह संभावना और संभावना है।

क्योंकि जीवित तो जानते हैं कि वे मरेंगे, कम से कम उनके पास तो यह है, परन्तु मरे हुए कुछ नहीं जानते। उनके आगे कोई प्रतिफल नहीं, यहां तक कि उनकी स्मृति भी भुला दी गई है। दूसरे शब्दों में, सूर्य के नीचे पृथ्वी पर उनके लिए कोई और गतिविधि उपलब्ध नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं है कि सभोपदेशक किसी तरह से 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 में न्याय की बीमा सीट और एक प्रकार के पुरस्कार के आधार के बारे में जो हम पवित्रशास्त्र में कहीं और देखते हैं, उसके विरोधाभासी है जिसके बारे में हम नए नियम से जानते हैं। यह ऐसा नहीं कह रहा है, यह बस इतना कह रहा है कि कब्र में गतिविधि के लिए अब और समय नहीं है। गतिविधि का समय कब है? गतिविधि का समय यहीं और अभी है।

यह उस जीवन में है जो हमारे पास वर्तमान में है। उनका प्यार, उनकी नफरत और उनकी ईर्ष्या बहुत पहले ही गायब हो चुकी है। वे फिर कभी भी सूर्य के नीचे होने वाली किसी भी चीज़ में हिस्सा नहीं लेंगे।

और इसलिए, अब हमारे पास जीवन का आनंद लेने का छठा उपाय है। और अब हम न केवल अवलोकन और प्रशंसा से आगे बढ़ गए हैं, बल्कि अब हम आज्ञा की ओर भी बढ़ गए हैं। हम अनिवार्यता की ओर बढ़ गए हैं।

जाओ, अपना भोजन आनन्द से खाओ, और अपना दाखमधु आनन्द से पीओ, क्योंकि अब जो कुछ तुम करते हो, परमेश्वर उस पर प्रसन्न होता है। सदैव श्वेत वस्त्र धारण करो और सदैव अपने सिर पर तेल लगाओ। अपनी पत्नी, जिससे आप प्यार करते हैं, के साथ जीवन का आनंद लें।

कठिन जीवन के सभी दिन जो भगवान ने आपको सूर्य के नीचे दिए हैं, क्षणभंगुर, कभी-कभी बेतुका, कभी-कभी रहस्यमय, कभी-कभी काफी निराशाजनक, कभी-कभी काफी संवेदनहीन जीवन जो हमें सूर्य के नीचे मिलता है, आपके सभी भारी, आपके नश्वर दिन। क्योंकि जीवन में यही तुम्हारा भाग, तुम्हारा भाग्य, तुम्हारा आवंटन है। भगवान ने अब तुम्हें अवसर दिया है।

और तेरे अमल में, सूरज के नीचे तेरा परिश्रम। आपका हाथ जो भी करने को मिले, उसे अपनी पूरी ताकत से करें। और मैं जोड़ूंगा, इसे अभी करो, कोहेलेट कह रहा है, कब्र में, शीओल में, जहां आप जा रहे हैं, और यह यहां नरक के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह स्वर्ग के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह सिर्फ कब्र के बारे में बात कर रहा है, जहां आप आगे बढ़ रहे हैं, न तो काम है, न योजना है, न ज्ञान है, न बुद्धि है।

सभोपदेशक का ज्ञान वर्तमान काल है। अभी कार्य करें, जो आप आज कर सकते हैं उसे कल तक न टालें, क्योंकि आप नहीं जानते कि कल की गारंटी आपके लिए है या नहीं। क्योंकि कोहेलेट ने देखा है, सूर्य के नीचे कुछ और भी है।

दौड़ तेज चलने वालों के लिए नहीं है या युद्ध ताकतवरों के लिए नहीं है, न ही बुद्धिमानों के लिए भोजन या प्रतिभाशाली लोगों के लिए धन आता है, जितना कि ये चीजें लाभ प्रदान कर सकती हैं, अंततः ईश्वर ही है जो नियंत्रण में है। क्योंकि उपकार केवल ज्ञानी या शिक्षित का ही नहीं होता, बल्कि समय और अवसर का होता है। और यह कोई गैर-आस्तिक समय और मौका नहीं है, बल्कि यह ईश्वर की गतिविधि है जिसे मनुष्य समझ नहीं सकता है।

समय और मौका उन सभी के साथ घटित होता है। इसके अलावा, कोई नहीं जानता कि उसका समय कब आएगा, उसका समय, उसका हिसाब का दिन, उसकी मृत्यु का समय, जैसे मछली क्रूर जाल में फंस जाती है, या पक्षी जाल में फंस जाते हैं, वैसे ही मनुष्य बुरे समय में फंस जाते हैं। उन पर अप्रत्याशित रूप से गिरना। सच तो यह है कि, इसे लेने के बाद मुझे नहीं पता कि मैं इसे आज शाम घर पहुंचा पाऊंगा या नहीं।

मैं बिल्कुल नहीं जानता। कोई गारंटी नहीं है। मैं सावधानी से गाड़ी चला सकता हूं, मैं वह सब कुछ कर सकता हूं जो यातायात के नियमों का बुद्धिमानी से पालन करने के लिए किया जाना चाहिए, लेकिन मैं नहीं जानता।

समय मुझ पर अप्रत्याशित रूप से गिर सकता है। और इसलिए, यहां सभोपदेशक का ज्ञान इस विचार में निहित है कि व्यक्ति को जीवन के प्रति ऐसा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो वर्तमान

अवसर की तलाश में हो। जो आप आज कर सकते हैं उसे कल पर मत टालो, क्योंकि कल की कोई गारंटी नहीं है।

अब उदाहरण कहानियों और कहावतों को जारी रखते हुए, संभाव्य ज्ञान पर उसी तरह की सोच जारी है। अध्याय 9 में श्लोक 13 से 16 में, हमारे पास इन उदाहरण कहानियों में से एक और है। यह उदाहरण कहानी अन्याय के मुद्दे और ज्ञान के कुछ लाभों और विफलताओं पर केंद्रित प्रतीत होती है।

श्लोक 13 में लिखा है, मैंने सूर्य के नीचे ज्ञान का यह उदाहरण भी देखा जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया, इसलिए बुद्धि लाभ प्रदान करती है। एक बार एक छोटा सा शहर था जिसमें केवल कुछ ही लोग थे, और एक शक्तिशाली राजा ने उस पर आक्रमण किया, उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध घेराबंदी कर दी। उस नगर में एक मनुष्य रहता था, वह गरीब परन्तु बुद्धिमान था, और उसने अपनी बुद्धि से उस नगर को बचा लिया।

हमें यह नहीं बताया गया है कि उसने ऐसा कैसे किया, केवल यह बताया गया है कि अपनी बुद्धि के माध्यम से वह इस शक्तिशाली राजा के खिलाफ शहर को बचाने में सक्षम था। लेकिन किसी को भी वह गरीब आदमी याद नहीं है। कोहेलेट इसे बहुत बड़ा अन्याय कहेंगे।

इसलिए, मैंने कहा, बुद्धि बल से बेहतर है, बुद्धि में शक्ति और लाभ है, लेकिन गरीब आदमी की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है, और उसके शब्दों पर फिर ध्यान नहीं दिया जाता। दूसरे शब्दों में, वह बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य अब याद नहीं किया जाता। यह व्यर्थ है।

यह शीघ्र ही परास्त हो गया है। मूर्खों के शासक की चिल्लाहट की अपेक्षा बुद्धिमानों की शांत बातें अधिक ध्यान देने योग्य होती हैं। दूसरे शब्दों में, बुद्धि शक्तिशाली है।

युद्ध के हथियारों से बुद्धि उत्तम है, परन्तु एक पापी बहुत सी भलाई को नाश कर देता है। और इसलिए हम ज्ञान के लाभ और ज्ञान की शक्ति को देखते हैं, लेकिन हम ज्ञान की नाजुकता को भी देखते हैं, कितनी जल्दी ज्ञान धुंध या धुंध में वाष्पित हो जाता है। जैसे मरी हुई मक्खियाँ इत्र को दुर्गंध देती हैं, वैसे ही थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और सम्मान पर भारी पड़ती है।

ऐसा बहुत बार होता है कि थोड़ी सी मूर्खता से भी बुद्धि खराब हो जाती है। बुद्धिमान का हृदय दाहिनी ओर और मूर्ख का हृदय बायीं ओर झुकता है। यह आवश्यक रूप से दाएँ हाथ वाले व्यक्तियों और बाएँ हाथ वाले व्यक्तियों या उनके जैसी किसी चीज़ की बात नहीं कर रहा है।

यह बस इतना ही कह रहा है कि राजा के दाईं ओर जहां शक्ति दी गई थी, और राजा के बाईं ओर जहां दासता का प्रयोग किया गया था, यहां यह सुझाव दिया जा रहा है कि ज्ञान खुद को अधिकार के पदों के लिए उधार देता है, जबकि मूर्खता खुद को उधार देता है दासता के पद। यहाँ तक कि जब वह सड़क पर चलता है, तो मूर्ख में समझ की कमी होती है और वह हर किसी को दिखाता है कि वह कितना मूर्ख है। और इसलिए यह एक तरह से मूर्ख के साथ मूर्खता करने जैसा है।

यदि किसी शासक का क्रोध तुम्हारे विरुद्ध भड़क उठे तो अपना पद मत छोड़ना। शांति बड़ी गलतियों को शांत कर सकती है। अध्याय 8 में याद रखें, कोहेलेट राजा के पास अनुग्रह माँगने या राजा के सामने किसी कारण की पैरवी करने के लिए आते समय अपनाई जाने वाली उचित मुद्रा पर विचार करता है।

यहां आपके पास एक प्रकार का उचित रवैया भी है और शायद अपने गुस्से को शांत करने का एक उचित प्रकार का तरीका भी है। दूसरे शब्दों में, यहां बस थोड़ा सा ज्ञान है और पतित दुनिया में ज्ञान का प्रयोग कैसे करें और इस दुनिया में होने वाली विभिन्न चीजों से कैसे निपटें। एक बुराई है जो मैं ने सूर्य के नीचे देखी है, उस प्रकार की त्रुटि जो शासक से उत्पन्न होती है।

मूर्खों को कई ऊँचे पदों पर बिठाया जाता है जबकि अमीरों को निचले पदों पर बैठाया जाता है। दूसरे शब्दों में, वह उस मूर्खता को देखता है जो इस दुनिया में सरकार और नेतृत्व में कभी-कभी होती है जहां राज्यपाल और नेता आवश्यक रूप से बुद्धिमानपूर्ण निर्णय नहीं लेते हैं। मैंने गुलामों को घोड़े पर सवार देखा है जबकि राजकुमारों को गुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

दूसरे शब्दों में, एक गिरी हुई दुनिया में, हम कभी-कभी चाहते हैं कि चीजें इस तरह से बनाई और संरचित की जाएं कि हमेशा बुद्धिमानों में से सबसे बुद्धिमान समूह का नेतृत्व करें, लेकिन कभी-कभी ऐसा नहीं होता है और कभी-कभी हम मूर्खों को ऊँचे स्थान पर पाते हैं पद। जो कोई गड्ढा खोदता है वह उसमें गिर सकता है। जो कोई दीवार तोड़ेगा उसे साँप डस सकता है।

ये एक तरह से सीधे-सीधे अवलोकन प्रतीत होते हैं, लेकिन इनके पीछे एक बिंदु है। जो कोई पत्थर खोदेगा वह उससे घायल हो सकता है। जो कोई लकड़ियाँ तोड़ता है, वह उनसे खतरे में पड़ सकता है।

1996 संस्करण में न्यू लिविंग ट्रांसलेशन इन टिप्पणियों के बाद एक बयान देता है। जीवन के जोखिम ऐसे ही हैं। मैं आपको सुझाव दूंगा कि यहां जो ज्ञान इन अवलोकनों में समाहित है वह जोखिम-उन्मुख ज्ञान है।

दूसरे शब्दों में, एक ऐसी दुनिया में जहां भविष्य अनिश्चित है, एक बुद्धिमान व्यक्ति को वास्तव में अभी भी आगे बढ़ने और लाभ प्राप्त करने के लिए, उसे कभी-कभी जोखिम उठाना पड़ता है। जीवन में उचित और मापा जोखिम उठाए बिना कभी भी कुछ भी नहीं किया जाएगा, और यही इन टिप्पणियों का मुद्दा प्रतीत होता है। लेकिन न केवल व्यक्ति जोखिम उठाएगा, न केवल व्यक्ति कड़ी मेहनत करेगा, बल्कि व्यक्ति चतुराई से भी काम करेगा।

एक बुद्धिमान व्यक्ति जीवन में सफलता पाने के लिए चतुराई से काम करेगा। और इसलिए, अगली कहावत भी उतना ही सुझाव देती है। यदि कुल्हाड़ी कुंद हो और उसकी धार तेज न हो तो अधिक ताकत की आवश्यकता होती है, लेकिन कौशल से सफलता मिलेगी।

न्यू लिविंग ट्रांसलेशन फिर से ज्ञान के ऐसे लाभों की व्याख्या करता है। दूसरे शब्दों में, ज्ञान जीवन में सफलता का एक बड़ा अवसर प्रदान करता है। यदि मंत्रमुग्ध किये जाने से पहले साँप काट ले तो मंत्रमुग्ध करने वाले को कोई लाभ नहीं होता।

दूसरे शब्दों में, हमें यहां यह जानना है कि यदि सांप ने पहले ही सपेरे को काट लिया है, तो सपेरे को कोई लाभ नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, लौकिक हथौड़ा गिरने से पहले आपको कार्य करना होगा। यदि आप बहुत लंबे समय तक प्रतीक्षा करते हैं, तो आप पाएंगे कि लाभ या लाभ का कोई अवसर नहीं है।

बुद्धिमान के मुंह से निकले हुए वचन मनोहर होते हैं, परन्तु मूर्ख अपने ही मुंह से नष्ट हो जाता है। आरम्भ में उसकी बातें मूर्खतापूर्ण होती हैं, और अन्त में वे दुष्ट पागलपन की बातें ठहरती हैं, और मूर्ख बातें बढ़ा-चढ़ाकर कहता है। तो फिर, पारंपरिक ज्ञान को प्रतिबिंबित करते हुए, मूर्ख वह है जो बोलता है और उसकी भाषा, उसके शब्दों के उपयोग में मापा नहीं जाता है।

कोई नहीं जानता कि क्या आ रहा है. उसे कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होगा? शायद यह मूर्ख की शेखी बघारने का प्रतिबिम्ब है। और इसलिए, जैसा कि हमने पहले एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में देखा है, एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो तब तक प्रतीक्षा करेगा जब तक कि चीजें पहले से ही निर्धारित न हो जाएं।

एक बुद्धिमान व्यक्ति, जश्न मनाने और डींगें हांकने से पहले, यह देखने के लिए इंतजार करेगा कि उसके उद्यम का परिणाम क्या हो सकता है, यह देखने के लिए कि उसने जो किया उससे किसी प्रकार की सफलता मिली या नहीं। और इसलिए हम उन लोगों के बारे में सोचते हैं जो विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं, जो उन महान उपलब्धियों का दावा करते हैं जो वे लाएंगे, जबकि वे, किसी घटना में, कुछ भी नहीं लाते हैं। और इसलिए, यह एक मूर्ख की भाषा है, जो सबूतों के सामने आने से पहले ही शेखी बघारना शुरू कर देता है।

मूर्ख का काम उसे थका देता है। उसे शहर का रास्ता नहीं मालूम. मूर्ख वह है जो बुरी सलाह देता है और जो वर्तमान में क्या किया जा रहा है इसके बारे में अनिश्चित है।

पद 16. हे देश, तुझ पर हाय, जिसका राजा दास था, और जिसके हाकिम भोर को भोज करते थे। हे भूमि, तुम धन्य हो, जिसका राजा कुलीन है, जिसके राजकुमार ताकत के लिए उचित समय पर भोजन करते हैं, नशे के लिए नहीं।

शायद यहां राजनीतिक शासन पर विचार करते हुए, कोहेलेट का मानना है कि पतित दुनिया में व्यक्तियों के लिए अच्छे नेतृत्व द्वारा शासित होना एक धन्य बात है। और निःसंदेह, जो लोग भ्रष्ट नेताओं के अधीन रह रहे हैं, वे बहुत ही कठिन स्थिति में जी रहे हैं। श्लोक 18.

यदि मनुष्य आलसी है, तो बेड़ियाँ ढीली हो जाती हैं। यदि उसके हाथ निष्क्रिय हैं, तो घर लीक हो जाता है। आलस्यपूर्ण व्यवहार और आलस्य के संबंध में पारंपरिक ज्ञान।

दूसरे शब्दों में, कोहेलेट द्वारा अपनाई गई कार्य नीति एक ऐसी कार्य नीति है जो परिश्रम की जिम्मेदारी को पहचानती है, साथ ही यह भी मानती है कि किसी ऐसी चीज के लिए प्रयास करना जिसे आप अंततः अपने साथ नहीं ले जा सकते, मूर्खता होगी। पद 19. भोज हँसी-मज़ाक के लिए

किया जाता है, और दाखमधु जीवन को आनंदमय बनाता है, परन्तु पैसा हर चीज़ का समाधान है।

मैंने पहले के एक व्याख्यान में इस कहावत का उल्लेख किया था जो कुछ हद तक अजीब लगती है, खासकर जब हम धर्मग्रंथ के अन्य ग्रंथों के बारे में सोचते हैं जो भगवान और धन की सेवा करने में सक्षम नहीं होने का उल्लेख करते हैं, या 1 तीमुथियुस अध्याय 6 में, पैसा ही इसका मूल है सभी प्रकार की बुराई। आप जानते हैं, कोहेलेट यहां किसी तरह से अपनी बुद्धि से पीछे नहीं हट रहा है। वह यहां उस तरह के सांसारिक दृष्टिकोण से बात नहीं कर रहा है जो भगवान के सामने पैसे को गले लगाता है, बल्कि वह पैसे की उपयोगिता को देख रहा है।

और यह फिर से व्यावहारिक ज्ञान है जिसे जीवन में सफलता की अधिक से अधिक डिग्री और संभावना खोजने के लिए जीवन में लागू किया जाना चाहिए। हंसी-मजाक के लिए दावत बनाई जाती है। इस अत्यंत संकीर्ण क्षेत्र में इसकी उपयोगिता है।

और शराब जीवन को आनंदमय बनाती है। ऐसा करने के लिए वाइन अच्छी है। लेकिन पैसा संभावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।

और इसलिए, सभोपदेशक का ज्ञान एक संभावना और संभावना-आधारित ज्ञान है। और इसलिए कोहेलेट उस संबंध में पैसे की खूबियों को देखते हैं। अपने मन में भी राजा की निन्दा न करना, और अपने शयनकक्ष में धनवान को शाप न देना, क्योंकि आकाश पर उड़नेवाला पक्षी तेरी बातें सुना सकता है, और पंख पर उड़नेवाला पक्षी तेरी बातें बता सकता है।

हमने अध्याय 8 में जो देखा और जो हमने कुछ छंदों में एक बुद्धिमान व्यक्ति के शब्दों के उपयोग के बारे में पहले देखा था, उसके अनुरूप है, खासकर उन लोगों के सामने जिनके लिए उसे उचित सम्मान और आदर देना चाहिए। राजा के विरुद्ध बकवास मत करो। अपने नियोक्ता के खिलाफ़ न बोलें।

उन लोगों के बारे में बात न करें जिनका आप पर अधिकार है। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि गपशप किस तरह फैलती है। और गपशप एक प्रकार की मूर्खता का उपक्रम है जिसे कोहेलेट काफी बेतुका मानते हैं।

दूसरे शब्दों में, एक बुद्धिमान व्यक्ति जो इस गिरी हुई और अनिश्चित दुनिया को बुद्धिमानी से चला रहा है, वह अपने शब्दों में बहुत सावधान रहेगा। न केवल जब उसे सुना जाना चाहिए, बल्कि तब भी जब उसे नहीं सुना जाना चाहिए। क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि वह छोटा सा शब्द पंख पर बैठा एक पक्षी कब उड़ा ले जाए।

अध्याय 11 एक अनिश्चित दुनिया में जीवन जीने और जीवन में कुछ हद तक सफलता पाने के लिए जोखिम उठाने और साहसी होने पर आधारित कहावतों की एक और श्रृंखला शुरू करता है। अध्याय 11 पद 1 में कहा गया है, अपनी रोटी जल पर डालो, क्योंकि बहुत दिन के बाद तुम उसे फिर पाओगे। साहसी बनो।

आगे कदम। आप हमेशा लाइन के पीछे रहकर सफलतापूर्वक जीवन नहीं जी सकते। सात को क्या आठ को भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि देश पर कैसी विपत्ति आ पड़ेगी।

यदि आप जीवन में सफलता पाने के लिए साहसपूर्वक जीवन जीते हैं, तो आपको अपने जोखिमों में विविधता लाने के अर्थ में भी सावधानी से जीवन जीना होगा। अपने सभी अंडे एक ही टोकरी में न रखें जैसा कि हम शायद आधुनिक युग में कहेंगे। यदि बादल जल से भरे हों, तो वे पृथ्वी पर वर्षा करते हैं।

पेड़ चाहे दक्षिण में गिरे या उत्तर में, जिस स्थान पर गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा। अब यह कुछ हद तक अजीब बयान है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कोहेलेट बस कह रहा है, एक भारी दुनिया में जहां मनुष्य का कोई अंतिम नियंत्रण नहीं है, कभी-कभी जो है, वही होता है। दूसरे शब्दों में, कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी घटित होती हैं कि मनुष्य का उन परिस्थितियों पर कोई वास्तविक नियंत्रण नहीं होता।

इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ना सीखेगा, तब भी जब वह उन चीज़ों को नियंत्रित नहीं कर सकता जो पहले ही घटित हो चुकी हैं। आयत चार में लिखा है, जो हवा को देखता है वह बो नहीं पाएगा, जो बादलों को देखता है वह काट नहीं पाएगा। आप हमेशा उत्तम परिस्थितियों के आने का इंतजार नहीं कर सकते।

कभी-कभी आप पाएंगे कि जीवन में चीज़ें डरावनी लगती हैं, और फिर भी अगर हमें जीवन में किसी भी हद तक सफलता हासिल करनी है तो हमें आगे बढ़ना चाहिए। फिर, जोखिम लेना इन कहावतों का प्राथमिक उद्देश्य प्रतीत होता है। चूंकि आप हवा का मार्ग नहीं जानते, या माँ के गर्भ में शरीर कैसे बनता है, आप सभी चीज़ों के निर्माता, भगवान के कार्य को नहीं समझ सकते।

इस ज्ञान को एक साथ बांधने जैसा। इस तथ्य के प्रकाश में कि आप भविष्य को नहीं जानते हैं, और आप यह भी नहीं जानते हैं कि भगवान इस दुनिया में कैसे काम करते हैं, आपको वर्तमान में जीवन को बुद्धिमानी से जीना सीखना होगा। आप जो समझते हैं, उसके प्रकाश में, आपके पास जो सीमित ज्ञान है, और जो आप देखते हैं, उसके प्रकाश में, आपको यह सीखने की ज़रूरत है कि जीवन में साहसिक कदम कैसे आगे बढ़ाएँ, भले ही आपको समझ न हो, और महारत हासिल न हो वे सभी परिस्थितियाँ जो आपको घेरे हुए हैं।

भोर को अपना बीज बोना, और सांझ को अपने हाथ बेकार न रहने देना। अब, कोहेलेट उस उत्सुक प्रयास का जिक्र नहीं कर रहे हैं जिससे वह किताब में पहले परेशान थे, बल्कि वह देखते हैं कि जीवन में सफलता पाने के लिए, आप बस आराम से बैठकर इंतजार नहीं कर सकते कि चीज़ें आपके पास आएंगी। आपको साहसी होने की आवश्यकता है, और जीवन में आगे बढ़ने के लिए आपको जोखिम उठाने की आवश्यकता है।

भोर को अपना बीज बोना, और सांझ को अपने हाथ बेकार न रहने देना। आप नहीं जानते कि क्या यह सफल होगा, या क्या वह सफल होगा, या क्या दोनों समान रूप से अच्छा प्रदर्शन करेंगे। कड़ी मेहनत करें और कार्यों में चतुराई से काम करें।

यदि आप ऐसा करते हैं और विविधता लाते हैं, तो सफल परिणामों की अधिक संभावना है। यह बहुत व्यावहारिक, बहुत व्यवहारिक ज्ञान है। जिस तरह की बुद्धिमत्ता हम कोहेलेट को जीवन जीने और अनिश्चित दुनिया में नेविगेट करने के लिए लागू करते हुए देखते हैं।

श्लोक 7, प्रकाश मधुर है, और सूर्य को देखना आंखों को प्रसन्न करता है। निश्चित रूप से, कोहेलेट उस अच्छाई की पुष्टि कर रहा है जिसका अनुभव किया जाता है या संभावित अच्छाई का जिसे जीवित लोगों के जीवन में अनुभव किया जाता है। हालाँकि, एक आदमी कई वर्षों तक जीवित रह सकता है, उसे उन सभी का आनंद लेने दें।

अब हम सातवें और अंतिम जीवन का आनंद लेना शुरू कर रहे हैं। परन्तु उसे अन्धकार के दिनों को भी स्मरण करने दो। याद रखें कोहेलेट पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

उसने अंधकार के दिन, पीड़ा के दिन देखे हैं और संयमपूर्वक जीवन जीता है। अध्याय 7 में नीतिवचन याद रखें जिसमें शोक मनाने वालों के घर में प्रवेश करने और मूर्खों के फूटते बर्तन की तरह न होने की बात की गई थी जो परिस्थितियों और उनके आसपास होने वाली घटनाओं से बेखबर होकर हंसते हैं। जीवन का आनंद लेने के अवसर खोजें, लेकिन इस पतित दुनिया में आपको घेरने वाली पीड़ा से बेखबर होकर, आंखों पर पट्टी बांधकर न जाएं।

यहां एक संतुलित दृष्टिकोण है जिसे अपनाया जाना चाहिए। क्योंकि बहुत सारे होंगे, अच्छे समय होंगे और बुरे समय भी होंगे। एक बुद्धिमान व्यक्ति जानता होगा कि इन दोनों से कैसे निपटना है।

आने वाली हर चीज़ फिर से बोझिल है, शायद यह जीवन के क्षणभंगुर और क्षणिक पहलू को प्रतिबिंबित कर रही है। खुश रहो, जवान आदमी, जब तक तुम जवान हो। इसलिए, युवाओं के साथ आने वाली संभावित संभावनाओं की पुष्टि करना।

और तेरी जवानी के दिनों में तेरा मन तुझे आनन्द दे। अब समय आ गया है कि हम लौकिक बल को सींगों से पकड़ने में सक्षम हों और भगवान द्वारा प्रदान किए गए हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएँ। अपने हृदय के मार्ग का और जो कुछ तेरी आंखें देखती है उसी का पालन कर, परन्तु यह जान कि इन सब बातों के लिये परमेश्वर तुझे दण्ड देगा।

जैसा कि मैंने पहले के व्याख्यानों में उल्लेख किया है, यह वह अद्भुत दो-तरफा ज्ञान सिक्का है, जो गिरी हुई दुनिया में बुद्धिमान जीवन जीने का आदर्श है। जीवन का आनंद लें, उन अवसरों का अधिकतम लाभ उठाएँ जो ईश्वर ने आपको उपहार में दिए हैं, उन अनुग्रहों का जो वह शापित और गिरी हुई दुनिया के बीच में भी प्रदान करता है, लेकिन ऐसे मत जिएँ जैसे कि हम एक शापित और गिरी हुई दुनिया में नहीं रह रहे हैं जहां पाप बहुत ही सामान्य अनुभव है। अध्याय 7 याद रखें, ऐसा कोई धर्मी व्यक्ति नहीं है जो हमेशा सही काम करता हो और कभी पाप न करता हो।

और इसलिए कोहेलेट को इसके बारे में पता है और वह जानता है कि बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख भी अपने किए गए कार्यों के लिए भगवान को जवाब देंगे। और इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति यह पहचानते हुए कि हम किस प्रकार की दुनिया में रहते हैं, संयमपूर्वक जाएगा, दुखों से बेखबर

नहीं, जीवन के प्रलोभनों से बेखबर नहीं। एक बुद्धिमान व्यक्ति जीवन का आनंद लेगा लेकिन पाप का आनंद नहीं लेगा।

तो फिर चिंता को अपने हृदय से दूर कर दो और अपने शरीर की परेशानियों को दूर कर दो। याद रखें, कोहेलेट ने कहा था कि यह बहुत शर्म की बात है, यह एक दयनीय बात है, यह एक मूर्खतापूर्ण बात है कि किसी व्यक्ति के लिए जीवन में प्रयास करना और उन चीज़ों के बारे में चिंतित होना जिन पर अंततः उनका कोई नियंत्रण नहीं है और युवाओं और जोश के लिए अपने शरीर की परेशानियों को त्याग देना चाहिए। क्षणभंगुर हैं। जान लें कि आज वर्तमान संभावना का दिन है।

जवानी और जोश बीत रहा है। जीवन में संभावनाओं को आज ही समझें। जान लें कि इस दिन आप अपने द्वारा किए गए कार्यों के लिए एक दिन भगवान को जवाब देंगे।

और इसलिए, भविष्य में क्या होने वाला है, इसकी पहचान करते समय एक प्रकार का वर्तमान तनावपूर्ण परिप्रेक्ष्य रखें। अपनी जवानी के दिनों में अपने रचयिता को याद करो। यह समझने का विचार कल तक मत टालिए कि आपने जो कर्म किए हैं उनका उत्तर आपको मिलेगा।

दूसरे शब्दों में, आज का दिन न केवल जीवन का आनंद लेने का है, बल्कि अपने निर्माता और उन गतिविधियों को याद करने का भी है जो आप मुसीबत के दिन आने से पहले करते हैं और वे साल करीब आते हैं जब आप कहेंगे कि मुझे उनमें कोई खुशी नहीं मिलती। इससे पहले कि सूरज और रोशनी और चाँद और तारे अँधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ, जब घर के रखवाले काँप जाएँ और बलवान आदमी झुक जाएँ, जब चक्की कम हो जाएँ और खिड़कियों से देखने वालों की धुँधली हो जाए। अब, कोहेलेट हमें उम्र बढ़ने की प्रक्रिया की एक तस्वीर प्रदान कर रहे हैं और उनके द्वारा चित्रित इन तस्वीरों में से प्रत्येक का सीधा संदर्भ देना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन यहां एक प्रकार का रूपक दृष्टिकोण है जहां उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को विभिन्न पहलुओं या पहलुओं द्वारा चित्रित किया जा रहा है। जीवन के तत्वों।

और इसलिए, उदाहरण के लिए, श्लोक 3 में आपके पास घर के रखवाले कांप रहे हैं, शायद यह एक वृद्ध व्यक्ति के हाथ कांपने और मजबूत पुरुषों को संदर्भित करता है, शायद पैरों में मांसपेशियों का तंत्र, पैरों में मजबूत मांसपेशियां और अंदर की मांसपेशियां। जब ग्राइंडर बंद हो जाते हैं तो पीठ झुकना शुरू हो जाती है क्योंकि इनमें दांतों और वृद्धों के गिरने वाले दांतों का जिक्र कम ही होता है, खासकर प्राचीन संदर्भ में जहां आपके पास आधुनिक दंत चिकित्सा नहीं थी और इसी तरह जब तक कोई व्यक्ति वहां तक पहुंच पाता था। एक निश्चित उम्र होने पर उनके दांत पहले ही गिर चुके होते हैं और जो लोग खिड़कियों से देखते हैं वे मंदबुद्धि, ग्लूकोमा और आंखों की अन्य प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। हमने पुराने समय के संतों के बारे में पढ़ा है जिनकी बुढ़ापे में दृष्टि धुँधली हो गई थी, शायद यह आंखों की रोशनी और दृष्टि की हानि को संदर्भित करता है। जब सड़क के दरवाजे बंद होते हैं तो शायद यह कानों की बात है और जब लोग पक्षियों की आवाज़ सुनकर उठते हैं तो पीसने की आवाज़ फीकी पड़ जाती है। और इसलिए, उम्र बढ़ने की एक विडंबना यह है कि भले ही सुनने की क्षमता कम हो गई है, फिर भी वृद्ध अक्सर नींद न आने की समस्या से जूझते हैं।

और सारे गाने तब फीके पड़ जाते हैं जब आदमी ऊंचाई से डरने लगता है, आप कभी-कभी बुजुर्ग लोगों के बारे में सुनते हैं जो बहुत सावधानी बरतते हैं। वे गिरना नहीं चाहते हैं और जब कोई बुजुर्ग व्यक्ति गिरता है तो एक युवा व्यक्ति के लिए कुछ ऐसा होता है कि एक वृद्ध व्यक्ति के लिए उससे उबरना बहुत आसान होता है। यह उस प्रकार की चीज़ बन जाती है जो अंततः अपंग कर देती है और उन्हें कब्र की ओर ले जाती है।

और सड़कों पर खतरों से जाहिर तौर पर बुजुर्ग लोग उसी स्तर पर अपना बचाव नहीं कर सकते। जब बादाम का पेड़ खिलता है तो इसका तात्पर्य शायद बालों के सफेद होने से है। और टिड्डा शायद कमजोरी का हवाला देकर खुद को घसीटता है और इच्छा अब उत्तेजित नहीं होती है, शायद बुजुर्गों में यौन इच्छा की कमी का जिक्र करता है। मनुष्य अपने शाश्वत घर में चला जाता है या फिर मनुष्य अपने शाश्वत घर में चला जाता है और शोक मनाने वाले लोग सड़कों पर घूमते हैं। जाहिर है, कब्र में मौत की बात का जिक्र है।

उसे याद करो, चांदी की रस्सी टूटने से पहले या सोने का कटोरा टूटने से पहले, कुएं पर घड़ा टूटने से पहले या झरने पर या कुएं पर पहिया टूटने से पहले भगवान को याद करो। मूल रूप से, कोहेलेट जो कह रहा है वह यह है कि इससे पहले कि जीवन का स्रोत बंद हो जाए और धूल जमीन पर लौट आए, भगवान को याद करें, यह फिर से उत्पत्ति अध्याय 3 की कल्पना और भाषा को उजागर करने से आया है।

और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने इसे पहले एक्लेसिएस्टेस अध्याय 3 में दिया था, कोहेलेट ने सोचा कि क्या उस आदमी का जीवन उस परमेश्वर के पास वापस जाएगा जिसने इसे दिया था। जीवन की वह सांस जो ईश्वर ने इसे दी थी या यहां वह मनुष्य की आत्मा की किसी प्रकार की युगांतकारी वास्तविकता का उल्लेख कर रहा है जो शायद अपने द्वारा किए गए कार्यों का उत्तर देने के लिए ईश्वर के पास लौट रही है। हम वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि कोहेलेट यहां किस बात का जिक्र कर रहे हैं, मैं इस बारे में बहुत अधिक धर्मशास्त्र नहीं पढ़ूंगा। मैं यहां केवल यह कहना चाहता हूं कि कोहेलेट मानता है कि हम अनिवार्य रूप से उत्पत्ति अध्याय 3 की भाषा को प्रतिबिंबित करने के लिए गंभीर धूल की ओर बढ़ रहे हैं।

इनक्लूसियो के ब्रैकेटिंग के पिछले सिरे के साथ एक और उत्कृष्ट हेबेल निर्णय के साथ यह सब समाप्त करता है हेवेल्स के हेबेल कहते हैं कि कोहेलेट सब कुछ हेबेल है।

और इसलिए, पुस्तक का मुख्य भाग यहीं समाप्त होता है लेकिन अध्याय 12 छंद 9 से 14 में हमारे पास एक उपसंहार है। यदि आप किताब का समापन करने वाले कोहेलेट के चिंतन पर विचार करें तो यह एक ऐसी टिप्पणी है जो काफी हद तक एक टिप्पणी के समान है। कोहेलेट न केवल बुद्धिमान था, इसलिए अब हमारे पास कोहेलेट का एक तीसरे व्यक्ति का संदर्भ है, बल्कि उसने लोगों को ज्ञान भी प्रदान किया। दूसरे शब्दों में, पुस्तक पर एक प्रकार की समापन टिप्पणी के रूप में उन्होंने कई कथावतों पर विचार किया, खोज की और उन्हें क्रमबद्ध किया। जब हमने विशेष रूप से अध्याय 7, अध्याय 10 और अध्याय 11 की सामग्री का सर्वेक्षण किया तो हमने निश्चित रूप से कई कथावतें देखीं। कोहेलेट ने सही शब्द खोजने के लिए जिस शिक्षक की खोज

की और उसने जो लिखा वह ईमानदार और सच्चा था। यह एक ऐसी पुस्तक है जिस पर महारत हासिल करना असंभव है, लेकिन यह अत्यधिक गहन है और यह वास्तव में एक ऐसी पुस्तक है जो अपने भीतर समाहित ज्ञान के मामले में इतनी अविश्वसनीय है।

शायद कोहेलेट शायद उस पुस्तक के लेखक हैं जो कोहेलेट के जीवन और विरासत से निपट रही है, यहां उपसंहार के लेखक का कहना है कि कोहेलेट के शब्द ईमानदार और सच्चे थे। हमारे पास ऐसी कोई टिप्पणी नहीं है जो यह बताती हो कि कोहेलेट ने ऐसी बातें कही थीं जो गलत और भ्रामक थीं, कि कोहेलेट का ज्ञान किसी को भटका देगा। बल्कि कोहेलेट की बुद्धि वह बुद्धि है जो लाभदायक है और इस गिरी हुई दुनिया में लाभ खोजने के लिए अच्छी है।

बुद्धिमानों के शब्द दूसरे शब्दों में प्रलोभन की तरह होते हैं, जिन्हें वे उकसाते हैं और वे अपनी एकत्रित बातों को मजबूती से गढ़े हुए कीलों की तरह प्रेरित करते हैं। वे एक चरवाहे द्वारा दी गई कुछ प्रकार की स्थिरता और आधार प्रदान करते हैं, कुछ अनुवाद चरवाहे को बड़े अक्षरों में लिखते हैं जिसका अर्थ है कि यह ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है, अन्य अनुवाद चरवाहे को बड़े अक्षरों में नहीं लिखते हैं। यह वास्तव में काफी अस्पष्ट है कि क्या यह ईश्वर और प्रेरित ज्ञान या केवल एक चरवाहे ऋषि का संदर्भ दे रहा है जो ज्ञान प्रदान करता है। शायद यह स्वयं कोहेलेट को संदर्भित करता है। यह निश्चित रूप से अस्पष्ट है कि सभोपदेशक का संदेश विहित साहित्य का हिस्सा है, ईश्वर से प्रेरित धर्मग्रंथ का एक हिस्सा निश्चित रूप से ईश्वर प्रदत्त अधिकार और ईश्वर प्रदत्त प्रेरणा को प्रतिबिंबित करेगा कि क्या यह हमारे स्वर्गीय पिता ईश्वर का एकमात्र चरवाहा है या नहीं, इस पर कुछ बहस चल रही है। . किसी भी स्थिति में एक्लेसिएस्टेस के शब्दों से यह स्पष्ट नहीं होता है।

यहाँ पर आगे बढ़ते हुए उपसंहार का लेखक हमें उस प्रकार का निषेधाज्ञा देता है जो हम नीतिवचन की पुस्तक में निर्देशात्मक प्रवचनों में पाते हैं। मेरे बेटे को इनके अलावा किसी भी चीज़ के बारे में चेतावनी दी जानी चाहिए और इसलिए आपको जो ज्ञान प्राप्त हो रहा है उसमें सावधान रहना चाहिए, वह मूल रूप से कह रहा है कि कोहेलेट ने यहां जो कहा है, उस पर मैं अनुमोदन की मोहर लगाता हूं, लेकिन याद रखें कि वहां कई शब्द हैं और कई कहावतें हैं। बहुत सी पुस्तकें बनाने के भ्रम में न रहें, उनका कोई अंत नहीं है और अधिक अध्ययन करने से हम शरीर को थका देते हैं, अधिक अध्ययन करने से शरीर थक जाता है, अब श्लोक 13 और 14 उस पुस्तक के लिए एक उपयुक्त निष्कर्ष लाते हैं जिसे हमने पहले एक व्याख्यान में देखा था कि डर का सभोपदेशक की पुस्तक के अध्याय 3 और श्लोक 17, अध्याय 5, श्लोक 1-7, अध्याय 11 और श्लोक 9 में ईश्वर का भाव व्याप्त है, बस कुछ के नाम बताने के लिए, ये सभी उस उचित श्रद्धा को दर्शाते हैं, जो कोहेलेट उन लोगों को चेतावनी देता है, जो ईश्वर की बात सुनेंगे, उन्हें ईश्वर से डरना चाहिए, लेकिन कोई जगह नहीं है। सभोपदेशक ने अध्याय 12 श्लोक 13 और 14 के समान स्पष्ट रूप से बयान दिया है, अब सब कुछ सुना जा चुका है। यहाँ इस विषय का निष्कर्ष है कि परमेश्वर से डरो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो। यह अनिवार्य है क्योंकि यह मनुष्य का संपूर्ण कर्तव्य है, कुछ अनुवाद मनुष्य के संपूर्ण कर्तव्य के साथ जुड़ेंगे। कुछ लोग कहेंगे कि यह बात सभी पुरुषों पर लागू होती है। यहां हिब्रू वास्तव में काफी अस्पष्ट है, यह कुछ अर्थों में दोनों का संदर्भ दे सकता है क्योंकि कोहेलेट किसी प्रकार की जानबूझकर अस्पष्टता के माध्यम से ऐसा करने के लिए बहुत उपयुक्त है, वह रूपकों के माध्यम से होता है और इस तरह कई विचारों को

लाता है। और इसलिए, शायद वह इस बात का उल्लेख कर रहा है कि इसमें मनुष्य का कर्तव्य शामिल है और यह सार्वभौमिक रूप से सभी मनुष्यों पर लागू होता है। हो सकता है कि वह दोनों बातें बहुत सधे अंदाज में कह रहे हों।

क्योंकि परमेश्वर हर काम का, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, हर छिपी हुई बात का न्याय करेगा। मुझे लगता है कि हर छुपी हुई चीज़ का यह संदर्भ बताता है कि शायद यहां एक प्रकार का युगांतकारी पुनर्जन्म संबंधी निर्णय देखने को मिल रहा है। ईश्वर जो सभी कार्यों को देखता है और जिसके लिए कुछ भी छिपा नहीं है, वह इस नश्वर और गिरे हुए अस्तित्व में मनुष्य द्वारा किए गए सभी कार्यों का हिसाब देगा। और इसलिए, परमेश्वर इन चीज़ों का न्याय करेगा। संयम से जियो. जान लें कि आप वर्तमान में जो कुछ भी करेंगे उसके लिए आप भविष्य में ईश्वर को जवाब देंगे, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। इस दोतरफा ज्ञान सिक्के के दोनों पहलुओं को समझें, जीवन का आनंद लें लेकिन संयम से जिएं।

जीवन का आनंद लें, लेकिन पाप का आनंद न लें, हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं, लेकिन यह जान लें कि आप जो काम करते हैं, उसके लिए आप न्याय में भगवान को जवाब देंगे।